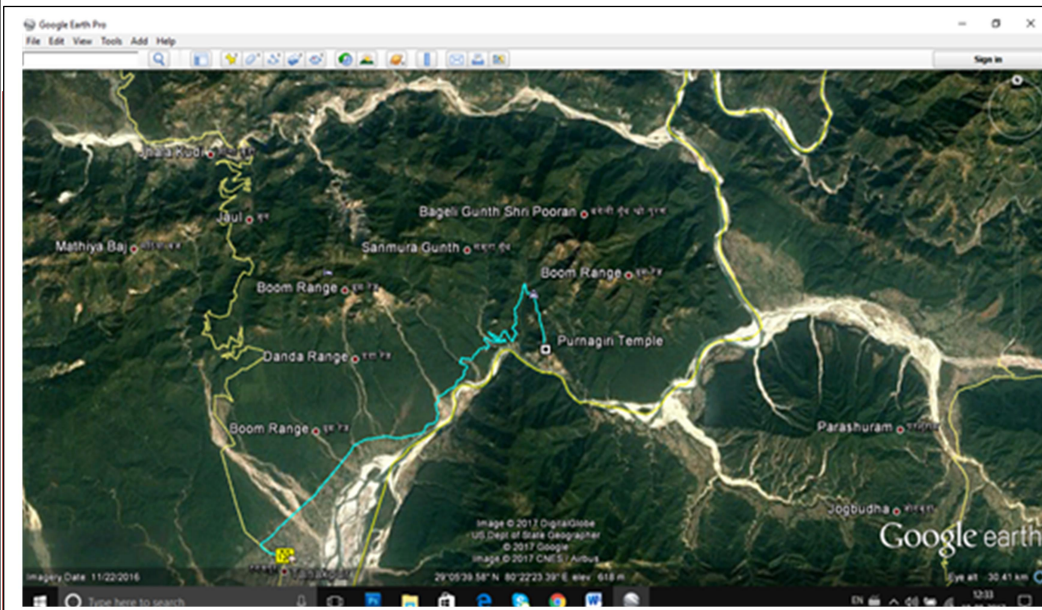


A Synthesis Report

Purnagiri Mela: A qualitative assessment & Recommendations

पूर्णागिरी मेला: एक आकलन और सुझाव

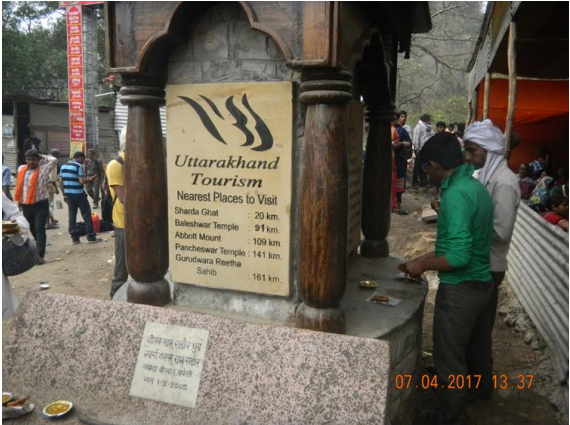
2017



Purnagiri Mela: A qualitative assessment & Recommendations for Improvement

पूर्णागिरी मेला: एक आकलन और सुझाव

2017



Environics Trust

Contents

उद्देश्य.....	3
संक्षेप में	3
सर्वेक्षण	4
निष्कर्ष और सुझाव	7

उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य शारदा नदी के किनारे और निचली पहाड़ी श्रृंखला में स्थित पुरनागिरि मंदिर से जुड़ी लोगों की सामाजिक-पारंपरिक और पर्यावरणीय कड़ियों को समझना है। यह भारत और नेपाल की सीमा पर स्थित है और नेपाल से भी काफी यात्री यहां आते हैं। मई से जून तक यहां अधिकतम यात्री आते हैं, इसी दौरान मूलभूत सुविधाओं, यात्री सुविधाओं की व्यवस्था और साथ ही साथ पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को समझने का यह एक अच्छा समय है। यहाँ कई हितग्राही हैं, जैसे दुकानदार, धर्मशाला चलाने वाले, लंगर लगाने वाले, प्रशासन, मुंडन करने वाले, प्रसाद वाले, पार्किंग ठेका वाले, यात्री इत्यादि।

ऐतिहासिक तौर पर यह शिवालिक श्रृंखला (या बाहरी हिमालय) का बहुत प्रसिद्ध स्थान है जहां लोग उत्तर प्रदेश की तराई से (शारदा नदी के जलगम क्षेत्र), नेपाल एवं उत्तराखंड से आते हैं। सुनने में आया है कि कई बार 40,000 से 50,000 यात्री प्रतिदिन यहां आते हैं। परंतु इस साल (2017) यात्री कम आए क्योंकि रेल यातायात नई लाइन बिछाने के लिए बंद किया गया है, दुकानदारों का मानना है कि इस साल यात्रियों के आगमन में 60-70% कमी आई है।

संक्षेप में

पुरनागिरि को टनकपुर-ककराली गेट-उचोलीगोठ-ठुलीगाड़-थुन्यास होते हुए जाया जाता है। ऊंचालिगोथ में 'बार कोडेड' टोकन दिये जाते हैं और यहां बड़ी गाड़ियों की पार्किंग भी है। एक जीप में 8 यात्री जाना निश्चित किया गया है। ठुलीगाड़ एक बड़ा पड़ाव है जहां से नीचे से आने वाली गाड़ियां यात्रियों को उतार वापसी सवारी की राह ताकने के लिए लाइन में लग जाते हैं। यहाँ से थुन्यास तक जाने के लिए करीब 35 जीपों का प्रबंध किया गया है, इन चालकों को प्रशासन द्वारा तय कुछ दैनिक राशि देनी पड़ती है। काफी लोग पैदल भी रास्ता तय करते हैं। थुलिगाड़ एक बड़ा पड़ाव है जहां लोगों को भोजन करते, विश्राम करते, इंतज़ार करते देखा जा सकता है। यहीं पर पुलिस और प्रशासन भी मौजूद है। थुलिगाड़ तक का रास्ता अब चौड़ा किया गया है।



सर्वेक्षण

इस अध्ययन के लिए यात्री सर्वे का इस्तेमाल किया गया और सर्वे के स्थान यात्री पड़ावों के महत्व के अनुसार ही चुने गए। इसके साथ ही एक आवाज़ आधारित प्रक्रिया¹ का भी प्रयोग किया गया जिससे कोई भी अपनी आवाज़ में संदेश रेकॉर्ड कर सकता है। जैसे थुलिगाड, यहां यात्रियों के लिए विश्राम और खाने-पीने के पड़ाव बनाए गए हैं इसलिए यात्री यहां मंदिर से आते हुए या मंदिर जाते हुए कुछ देर रुकते हैं; ब्रह्मदेव, जो कि नेपाली सीमा में स्थित (शारदा बेराज पार) है, ऐसा स्थान है जहां यात्री पुरनागिरि मंदिर के बाद दर्शन को जाते हैं – इससे पौराणिक कथाएं भी जुड़ी हैं।

सर्वे का आकार: कुल 317 यात्रियों का सर्वेक्षण किया गया और निम्न प्रश्न पूछे गए जिनका सार प्रस्तुत है;

1. क्या श्रद्धालु प्रति वर्ष आते हैं ?

- साक्षात्कार से पता चलता है कि करीब 42% यात्री हर वर्ष मेले में आते हैं। इस साल रेलवे ट्रैक चौड़ा करने के लिए यातायात बाधित रहा जिसके चलते यात्रियों का आवागमन कम रहा।

2. आने वाले श्रद्धालुओं का विवरण

- मेले में आने वाले यात्रियों से जब यह पूछा गया कि क्या वह अकेले या समूह में आते हैं तो 87.33% लोगों ने बताया कि वे समूह में आते हैं (61.51% परिवार के साथ और 25.86% मित्रों के साथ); मात्र 12.30% यात्री ऐसे हैं जो अकेले आते हैं। यह आम तौर पर देखा जाता है कि लोग समूहों में ही आते हैं।

¹ इसके बारे में जानकारी पेज संख्या पर दी गई है।

3. श्रद्धालुओं के सदस्यों की संख्या

- कुल 317 साक्षात्कार किए गए और उनसे उनके साथ समूह में आने वालों की संख्या भी पूछी गई। आकलन से पता चलता है कि एक समूह में औसतन 7 से अधिक लोग रहते हैं (चाहे वे परिवार के लोग हों या फिर मित्र)।

4. आप दर्शन करने कितनी बार आ चुके हैं ?

- आकलन से यह पता चलता है कि पहली बार आने वाले यात्रियों की संख्या 25.24% रही, जबकि दूसरी बार आने वाले 17.03%, तीसरी बार आने वाले 20.19%, चौथी बार आने वाले 11.99%, और चार से अधिक बार आने वाले 25.24% रहे। इससे यह पता चलता है कि अधिकतर लोग पुरनागिरि धाम में आते रहते हैं।

5. रात्रि पड़ाव कितने श्रद्धालुओं ने किया ?

- थुन्यास से पुरनगिरि मंदिर तक रात्रि पड़ाव के लिए कई धर्मशालाएँ हैं जहाँ यात्री रात्रि विश्राम के लिए रुकते हैं। कुछ टनकपुर में भी रुके। साक्षात्कार देने वाले करीब 70% यात्रियों ने बताया कि वे रात्रि में रुके। पर यह नहीं कहा जा सकता कि एक समय में (एक रात में) कितने लोग थुन्यास से पुरनगिरि भवन के बीच ठहरे, पर यह महत्वपूर्ण विषय है जो आपदा प्रबंधन से सीधा जुड़ा है।
-

6. धर्मशाला में बुनियादी सेवायें कैसी थी ?

- करीब 297 लोगों ने जवाब दिया - 237 साक्षात्कारों में सभी बुनियादी सुविधाओं को ठीक कहा गया है जबकि 60 लोगों ने एक से ज़्यादा सुविधा के लिए जवाब दिया है (इनमें 26% लोगों ने पानी उपलब्धता (नहाने, इत्यादि) को ठीक कहा, 27% लोगों ने धर्मशाला में सफाई व्यवस्था को सही कहा, सबसे कम प्रतिशत, यानि 14% ने पेयजल को सही कहा और 34% ने शौचालय/स्नानग्रह होने को सही ठहराया।) जबकि 20 लोग जवाब नहीं दे पाये। इससे यह भी पता चलता है कि दिन में ही यात्रा करने वाले और रात्रि रुकने वाले यात्रियों के जवाबों (बुनियादी सुविधाओं के बारे में) में अंतर होंगे।

7. निम्न में कौन सी सुविधायों में प्रबन्धन/व्यवस्था की और बेहतर के लिए अनुशंसाएं/सिफारिशें करेंगे क्यों ?

- आकलन से पता चलता है कि 255 लोगों ने जवाब दिये पर उनमें से 49 लोगों ने एक से ज़्यादा सुविधा के प्रति अपना पक्ष रखा। सबसे ज़्यादा 33% रुझान रैन बसेरे के सुधार या

और व्यवस्था बनाने की ओर रहा; 25% शुद्ध पेयजल के प्रति, 12.5% कूड़ा प्रबंधन और इतना ही स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रति रहा। इन सब सुविधाओं के अलावा लोगों का यह मानना है कि;

- उनको दुकानों से प्रसाद ज़्यादा राशि का लेना पड़ता है, जैसे 251 रुपए का, इस पर रोक होनी चाहिए क्योंकि प्रसाद कम राशि का भी मिलना चाहिए
- पीने का जल थुनास से मंदिर और वापिस थुलिगड तक निशुल्क मिलना चाहिए, बोतल वाला पानी महंगा मिलता है और पूरा भी नहीं पड़ता



Night shelter, Thuligad
रात्रि विश्राम गृह, ठुलीगाड़



Food prepared and served from tents
भोजन सेवा



A community toilet (in white), some 40m
apart from food tents
सामुदायिक टायलेट (खाने के टेंट से कुछ 40 m दूर)



People clustering for water near a tap
पानी के नल के पास लोगों का जमावड़ा। अधिक
नल और स्वच्छ सुविधा अपेक्षित



A platoon of pilgrims after the darshan!
दर्शन करके लौटते यात्रियों का समूह



Standing atop! Clipped one over the other
पहाड़ी ढलान पर टीके हुए भवन



One more structure on the edge, the
encircled portion shows stepping drain pipes
emptying onto the slope
किनारे पर एक और भवन, सफ़ेद गोला पानी निकासी की
सिड्डीनुमा पाइप दर्शा रहा है



Dumped on slopes and also being burnt!
प्लास्टिक और अन्य ठोस कूड़ा ढलान पर और कुछ
जलाया भी जा रहा है

निष्कर्ष और सुझाव

चूंकि सामान्य परिस्थितियों में धार्मिक स्थलों पर जाने वाले यात्री इकट्ठे (समूह में) जाते हैं (6 से 7 लोगों के समूह में जैसा कि सर्वे में पता चला), प्रभावों का सिलसिला भी तक शुरू होता है, जैसे खाना-पीना और उससे उत्पन्न कूड़े का निस्तारण, अगर कूड़ादान हो भी तो यह भर जाने की स्थिति में ढलान पर ही खाली कर दिया जाता है। हालांकि थुलगाड़ पड़ाव में सार्वजनिक खाने के स्थान बनाए गए हैं (लंगर) जहां से कूड़ा निस्तारण आसान तो है (ज़्यादातर जैविक) पर इसको अगर फिर शहरी कूड़े के ढेर में निस्तारित किया जाएगा तो यह समस्या को और बढ़ाएगा ही। चूंकि अधिकतम कूड़ा जैविक है (पत्तल, दोने, सब्जी काटने पर उनके अवशेष, बचा-खुचा खाना इत्यादि) इसको एक 'ठोस कूड़ा प्रबंधन' के उदाहरण के तौर पर 'जैविक

खाद' आदि बना कर लोगों को चेताया भी जा सकता है और उनको भेंट स्वरूप एक पैकेट ले जाने को दिया जा सकता है।

काँच के मर्तबान अब इस्तेमाल नहीं होते, पर इनमें खाद्य पदार्थों की शुद्धता बनी रहती है और प्लास्टिक से भी छुटकारा मिलता है, इनको सूखे कपड़े से या धो कर निरंतर इस्तेमाल किया जा सकता है। इनमें रखने वाली सामग्री भी स्थानीय स्तर पर तैयार की जा सकती है और ताज़ा ही लोगों तक पहुंचाई जा सकती है। अगर पैकेट सामग्री आएगी तो प्लास्टिक से सुलझना संभव ही नहीं होगा। इसलिए इसकी जड़ का ही उपचार करना होगा। मंदिर समिति स्थानीय सामग्री को कंट्रोल रेट पर ही बेचने को प्रोत्साहित करे। इससे (बेकरी) स्थानीय रोजगार के साधन और बढ़ेंगे और पर्यावरण को भी साफ रखा जा सकेगा। दूसरी गहरी समस्या जो पहाड़ में देखी जा रही है वो है ठोस कूड़े का निस्तारण, जो ढलानों पर गेर कर, चुन कर जलाया जा रहा है। यहाँ के कूड़ा निस्तारण को एक अच्छे उदाहरण के तौर पर कर के दिखाया जान चाहिए क्योंकि यहाँ का उदाहरण बहुत से लोगों के माध्यम से अनेक जिलों तक अच्छा संदेश ले जाएगा।

यात्रियों के लिए रास्ते में पीने के पानी के लिए एक या दो पड़ाव देने से सहूलियत होगी, जहां पानी पिलाने के लिए स्टॉल लगाए जा सकते हैं जहां प्लास्टिक का इस्तेमाल न किया जाये इसका ध्यान भी रखा जाए। आज कल वॉटर ए.टी.एम. सार्वजनिक जगहों पर लगाए जा रहे हैं, इसी तरह का चेरीटेबल मोडेल प्रशासन द्वारा सोचा जा सकता है।

बहुत से यात्रियों का कहना है कि मंदिर में चढ़ावे के लिए प्रसाद खरीदने पर दुकानदार ज़्यादा राशि का प्रसाद खरीदने को मजबूर करते हैं, यह नहीं होना चाहिए। जैसा कि काफी धार्मिक स्थानों में होता है, प्रसाद की पर्ची (प्रीपेड) दी जा सकती है जिसके दिखाने पर उनको उतनी राशि का प्रसाद ऊपर मिल जाये। क्योंकि दुकानें बहुत हैं (प्रशासन को इनके पंजीकरण के बारे में जानकारी तो होगी ही) तो पर्ची को दुकानों के हिसाब से चक्रीय प्रक्रिया में दिया जाये ताकि सबको एक समान मौका मिले। इससे दूकानदारों को प्रसाद की डिमांड का सही अनुमान रहेगा और हर कोई ज़्यादा प्रसाद रखने से कतराएगा। यह कितना कारगर होगा यह समिति या दूकानदारों से बात कर पता चलेगा।


हर साल थुन्यास से भवन तक पड़ने वाली धर्मशाला, अन्य ठहरने के स्थान, दुकानों का पर्यावरण ऑडिट हो जिसका खर्च प्रशासन उठाए ताकि हर साल बहुतायत में आने वाले यात्रियों की सुरक्षा और सुविधाओं में कड़ापन आए। अधिकतर धर्मशालाएं 'लोड बेयरिंग वाल' की बजाए ढलान पर पिल्लर (लकड़ी या लोहा)

पर बनाई जा रही हैं या बनी हुई हैं। ढलानों से मिट्टी का बहना और यह कितना भार ले सकती हैं इसका शायद अंदाज़ा नहीं है जो जानना ज़रूरी है ताकि निर्धारित भार से अधिक भार न हो। पानी का भंडारण भी इस भार में शामिल किया जाना चाहिए।

धर्मशाला में बने शौचालय और स्नानग्रह से गंदे पानी का निस्तारण सीधा ढलानों पर होता है जिससे पानी रुकने और उससे होने वाली बक्टीरियल इन्फ़ेक्शन/संक्रमण का खतरा और बढ़ जाता है। इसको एक समय में अधिकतर लोगों द्वारा इस्तेमाल करने (पीक) के लिहाज से देखेंगे तो पता चलेगा कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम 60-80 लीटर साफ पानी के हिसाब से लाखों लीटर गंदा पानी बन कर नदी नालों में बहता है।

लोग प्रसाद में नारियल, फलियां, मीठे दाने, चुनरी, धागा, धूप, इत्यादि पैकेट में खरीदते हैं और भवन में चढ़ाते हैं, पर खाने और जलाने वाली चीजों को छोड़ कर जैसे प्रसाद का प्लास्टिक पैकेट, चुनरी, धागा इत्यादि मंदिर के पास ही पहाड़ी ढलानों पर फेंका पाया जाता है। इस पर कोई कदम उठाना चाहिए ताकि यह इस प्रवृत्ति को बढ़ावा न मिले।

इन सुझावों को स्थानीय लोगों के साथ ही मिल कर आगे कुछ काम प्रशासन द्वारा किया जा सकता है जो टिकाऊ होगा। अनेक लोगों की आजीविका इस धार्मिक स्थल से जुड़ी है, इसलिए कोई भी फैसला, ऐसे लोगों को शामिल कर के लेने में ही यह एक लंबे समय के लिए टिकाऊ उदाहरण हो सकता है। 'प्रदूषक भरपाई करे' जैसे मूल नियम को कड़ाई से लागू करने से ही सही प्रणाली का विकास होगा पर इस स्तर तक पहुँचने के लिए लोगों को भी अपने व्यवहारों को ढालने का अवसर अवश्य मिलना चाहिए।



74094 65288

शारदा के स्वर
जुड़िए आपस में

7409465288 पर मिससड कॉल दें। आपको वापिस कॉल आएगा। पूरे निर्देश सुनें। दो विकल्प मिलेंगे -

1 दबाने पर आप अपना संदेश रिकार्ड कर सकेंगे और संदेश समाप्ति पर फिर 1 दबाने पर ही आपका संदेश रिकार्ड होगा। संदेश रिकार्ड करने के लिए 3 मिनट का समय होगा।

2 दबाने पर आप रिकार्ड किए हुए संदेश तुरंत सुन पाएंगे और उनको आप www.indonepal.net वेबसाइट पर कभी भी सुन सकते हैं।

इस तरह शारदा के स्वर, आपके स्वरों के माध्यम से आपस में जुड़ेंगे। कुछ सचेत व्यक्ति-अधिकारी भी शायद इन संदेशों को सुनने के बाद मददगार हों और समस्या निवारण में कुछ सहायक हों!

इसी आशा के साथ - शुभ संदेश!

जुड़िए आपस में
74094 65288



भारत और नेपाल की सहायक नदियां शारदा जलग्रहण क्षेत्र का स्वरुप बनाती हैं। इस पूरे स्वरुप को शारदा के स्वर के माध्यम से घाटियों, लोगों और उनके स्वरों को जोड़ने का प्रयास किया गया है। क्या आप भी इन स्वरों से जुड़ेंगे?

कैसे? उपरोक्त मोबाईल नंबर पर मिससड कॉल देकर!

क्यों? आपके अच्छे कार्य से और लोग सीख सकते हैं; घाटी, गांव, पंचायत की सामाजिक-आर्थिक-परंपरागत-पर्यावरणीय स्थितियों को साझा कर सकते हैं, समस्याओं का ताना-बाना बता सकते हैं; भिन्न-भिन्न विषयों पर अपने विचार रख सकते हैं।

अगर कोई संदेश देने में समर्थ नहीं हो, तो उनकी मदद भी करें।

ईजाफ ईडो-नेपाल ज्वॉइंट एक्शन फोरम

ENGLISH VERSION

Context

The purpose of this study is to understand the socio-cultural and environmental interrelation among pilgrims and the Purnagiri temple, located in the lower mountain ranges (approx. 800m) on the hill abutting the Sharda river. It is located on the border of India and Nepal, and quite a lot of pilgrims come from Nepal also. Most of the pilgrims visit this shrine throughout the year but maximum rush of pilgrims is observed during the month of May through June (begins on Chaitra Navratri). This period obviously is a good time to understand the interplay of ethos and environmental preparedness. There are many stakeholders like pilgrims, shopkeepers, lodging and goods provider, food service, traders, administrators, contract service providers etc.

Historically, it is a very famous pilgrim spot in the Shivalik (or the outer Himalayas) series where people come from the Terai of Uttar Pradesh (the watershed of Sharda), Nepal and Uttarakhand. It's also claimed that sometimes 40,000 to 50,000 pilgrims visit the shrine every day. But this year (2017) low pilgrim turnout is blamed on the disrupted rail traffic due to repair and relaying of broad gauge tracks till Tanakpur. Shopkeepers believe only 1/3rd turnout is witnessed this season.

Access and related links

Purnagiri shrine can be reached via Kakrali Gate (Tanakpur)-Thuligad-Thunyas. Vehicles are stopped at Ucchaligoth and bar-coded tokens are provided to the pilgrims, many HMVs are also parked here. Thuligad is a transition zone from where the pilgrims alight from the vehicles and either take vehicles assigned for the purpose to reach the shrine or set up their journey on foot. The vehicles again line up for their return journey to Tanakpur. About 35 jeeps have been permitted to ferry pilgrims upto Thunas, these drivers have to pay some daily amount fixed by the administration. At Thuligad, people can be seen eating, resting and waiting. The presence of police and administration is witnessed here.

Pilgrim surveys were done for this study at two places viz. Thuligad and Brahmdev. At Thuligad, facilities like resting sheds/shelter, food, water and sanitation is available for passengers making this a preferred halting point for pilgrims. Brahmdev, which is located in the Nepalese territory (across Sharda Barrage), is a place where pilgrims visit the shrine after praying at Purnagiri temple – there is a mythological story associated between Purnagiri temple and Brahmdev.



Near Uchaligoth



Thuligaad

Highlights of Survey

A total of 317 pilgrims were surveyed and the following results were summarized;

1. Do the devotees come every year?
 - a. The result of the survey shows that about 42% of the passengers visit the fair every year. It must also be noted that this year rail traffic is disrupted.
2. Do devotees come in groups or alone?
 - b. Devotees were asked if they travelled in groups or alone, 87.33% of the people responded that they come alongwith group (61.51% with family and 25.86% with friends); Only 12.30% travelers are those who come alone. This is a widely seen phenomenon across different pilgrim centres.
3. Number of devotees
 - c. A total of 317 interviews were conducted and the number of accompanying members was also asked. On an average, more than 7 peoples' group (whether they are family members or friends) is inferred from the findings of the survey.
4. How many times have you come for darshan?
 - d. Assessment shows that the number of pilgrims coming for the first time is 25.24%, 17.03% have come for the second time, 20.19% have come for the third time, 11.99% have come for the fourth time, and 25.24% pilgrims have come for more than four times. This shows that Purnagiri is their usual pilgrimage place and their affinity to this place may be due to several factors.

5. How many pilgrims stayed overnight?

- e. There are several Dharamshalas for the night halt from Thunas to the Purangiri Temple, where the travelers stop for the rest of the night. Some stayed in Tanakpur. 70% of those interviewed say that they stayed overnight. But still it cannot be established as to how many pilgrims stayed between thunyas and purnagiri shrine on a given night, probably that is a crucial information directly related to disaster management.

6. What about basic services in Dharamshala (Shelter)?

- f. Nearly 297 people responded to this. In all, 237 interviewees, felt that all the basic amenities were fine, while 60 people have stated about more than one facility (26% water availability, 27 % appreciated cleanliness in shelters, the lowest percentage, i.e. 14%, praised drinking water facility and 34% justified the toilets / bathing.) 20 interviewees could not answer. It also shows that there will be differences in the responses (about basic amenities) of travelers traveling in the day and night stay travelers.

7. Among the following facilities which one will you recommend for better management / arrangement?

- g. Assessment reveals that 255 people responded. Among them, 49 chose more than one facility. The highest 33% of response was for improving shelter arrangements for the pilgrims with more basic facilities; 25% recommended for provisioning of pure drinking water, 12.5% said about waste management and 13% on providing 24 hour health facilities. Apart from all this, people believe that;
 - i. There has to be some regulation on the price and quantum of Prasad sold at shops enroute Purnagiri shrine.
 - ii. Availability of clean drinking water from Thuligad-Thunas to Purnagiri should be ensured free of cost as bottled water is costly and hardly suffices in a group.



Night shelter, Thuligad



Food prepared and served



Community toilet near the cooking area



People clustering for water near a tap



A platoon of pilgrims returning back



Standing atop! Clipped one over the other



One more structure on the edge, the encircled portion shows stepping drain pipes emptying onto the slope



Dumped on slopes and also being burnt!

Contextualizing Recommendations

Most often pilgrims travel in groups to religious places (in groups of 6 to 7 people, as revealed in the survey), impacts of varying nature begin alongwith, like eating food and disposal of articles, often the solid waste bins are emptied on the hill slopes as a convenient option. Though public dining places have been organised in Thuligad transition zone (for serving free food to pilgrims), where waste disposal is easy (mostly organic) but it must be ensured that the waste is not transported to landfill or mixed in urban waste or disposed over open ground - it will further increase the problem. The waste also ends up in the river. Since the maximum waste is organic (leaf plates, food remains, cut vegetables etc.) a by-product like 'organic manure' etc. can be produced as an example of 'solid waste management'. The same product can also be distributed as a token of appreciation for keeping the place clean and spreading the message outside the state via these pilgrims.

The glass jars are now rarely used, but they maintain the purity of food and may help keeping plastic at bay, they can be used time and again as their cleaning by dry cloth or even by washing makes it absolutely like new. More fresh products can be stored in them which don't lose their taste and these products can be prepared locally to maintain freshness. If products are bought from outside, plastic will come in, and it would not be possible to get settled with plastic. Temple authorities should encourage locally made products which can be sold at control rate. This may help in promoting local employment, say Bakery enterprise, and it will promote environmental ethics. Another deep rooted problem which is seen in the mountain is the disposal of solid waste, like disposing, sorting and burning it over mountain slopes. Environmentally sound waste disposal & management will carry the message to far and to many.

It will be convenient to provide drinking water enroute Purnagiri shrine. Now that water ATMs are being installed in public places in the country, a charitable model of the same can be explored by the authorities. Once people know about water availability, they will carry bottle or glass along and will not rely on plastics.

Many travelers complained that the shopkeepers price the Prasad at a high rate that the pilgrims are forced to buy the same for temple offering, it should be restrained. As is done in many religious places, Prasad's slip (prepaid) can be given, on which the offerings of such amount should be given to them. Because the shops are many (the administration will have information about their registration), the slip should be given in the cyclical process according to the number of shops so that all shops get a chance. In this way the shopkeepers will know the daily peak demand and a cyclic production cycle can thus be tuned. It can be worked out effective by talking to the committee or shopkeepers.

Most of our religious and pilgrimages are located at places which are slowly becoming crowded and vulnerable due to over capacity. Every year there can be an environmental audit of facilities and safety parameters by the administration so that the safety and comfort of passengers arriving in abundance every year becomes smooth. This will build trust and there will be lesser repercussions on regulating the numbers! Most shelters (dharamshalas) are being build/repared or built on Pillar (wood or iron) on the slopes. The load bearing capacity of the slope and erosion rate is not known (of structure over pillar), both these parameters hold importance for the structural safety of shelters. Many shelters have 5-6 bathrooms and they must be storing water thus increasing the live load. An estimate on total peak load over a night will give a balanced idea about the load which structure can bear and what additional strengthening is required.

Wastewater (black and grey) disposal on the slopes increases the risk of bacterial infections caused by water stagnation and also scour the slopes (slow soil erosion). Once the peak live load of the structure increases (more no. of people at a given time) millions of liters of dirty water is generated (assuming usage of 60-80 litre water used for bathing, flushing, washing) and finds its route into the river downstream.

People buy coconut, sweet grains, chunari, thread, incense sticks etc. for offerings in the shrine but except for articles like coconut or sweets which can be consumed and incense stick which can be burnt and thread which is tied – other associated articles like prasad's plastic packets, chunari, thread etc., have also been found spread along the slope of hills. This should be tackled and this trend should be discouraged.

These suggestions can be explored by the administration with the experienced officials engaged in the mela and local people for making efforts long lasting if anything materialises.

Many people's livelihood is linked to this religious place/pilgrimage, so any decision if taken by involving such people will help in long run. Polluters pay principal is good in law but given the circumstances where those earning livelihoods would be directly affected, behavioural shift is required for which time and effort is crucial.

Vehicle overloading was one of the complaints by pilgrims. An amicable settlement of terms and conditions (fees/charges, no. of passengers, increasing or decreasing the vehicles) between the administration and vehicle operators may probably resolve this issue.

Awareness tokens can be given to them like how much SW they generate (report card) which they can use in their locations also for generating awareness.

सर्वे के समय लोगों ने क्या कहा ! कुछ झलकियाँ

1. नरेन्द्र, बदायु (उत्तर प्रदेश) से परिवार के 3 सदस्यों के साथ पूर्णागिरी के दर्शन करने के लिए चार से अधिक बार आ चुके हैं। अधिकतर यात्री टुन्यास धर्मशाला में रुकते हैं और सुबह होते ही दर्शन करके ब्रम्हदेव आ जाते हैं फिर शाम को अपने घर की ओर लौट जाते हैं। उत्तराखंड सरकार आपातकालीन सेवा जैसे पुलिस, एम्बुलेंस और जननी सुरक्षा यदि शुरू न हो तो शुरू कराये।

समस्या एवं सुधार

- निःशुल्क ठंडे पानी (ठुलीगाड़ से टुन्यास तक) की व्यवस्था हो
 - निःशुल्क शौचालय बनवाए जाएँ
 - पैदल यात्रियों (ठुलीगाड़ से टुन्यास के बीच-बीच में पानी वाले हैंडपंप में सुधार होना चाहिए)
 - सरकार द्वारा धर्मशाला शौचालय /स्नानागार बनवाया जाये
 - 108 एम्बुलेंस (चिकित्सा सेवा) आपातकालीन सेवा उपलब्ध हो
2. अनिल सिंह राठौर, रुद्रपुर, जिला-उधमसिंहनगर (उत्तराखंड) 08/05/2017 को पूर्णागिरी में दर्शन करने के लिए परिवार के 10 सदस्यों के साथ आए। वे चार वर्ष से लगातार दर्शनों के लिए आ रहे हैं। वह एक रात टुन्यास धर्मशाला में विश्राम के लिए भी रुके। यहाँ की सफाई व्यवस्था, पानी, शौचालय और स्नानागार अच्छा है। इनके द्वारा पूर्णागिरी में कुछ समस्या एवं सुधार की बातें निम्न हैं;

समस्या एवं सुधार

- ठुलीगाड़ और टुन्यास के प्रवेश द्वार में सामान चेक करने वाली मशीन (जैसे दिल्ली के मेट्रो स्टेशन में) होनी चाहिए
 - दुकानदार द्वारा प्रसाद 251 रुपये का दिया गया जबकि वही प्रसाद अगर टनकपुर में लिया जाए तो 50 रुपये का मिलेगा. उचित रेट में प्रसाद दिया जाए
 - धर्मशाला में सबसे पहले अच्छे स्थान पर रोका जाता है और मंदिर में दर्शन करके वापस आने पर दुसरे जगह में भेज दिया जाता है। वहाँ शौचालय की सुविधा अच्छी नहीं होती है
 - धर्मशाला के अन्दर शौचालय /स्नानागार में पानी कम उपयोग करने देते है
 - चिकित्सा सेवा उपलब्ध नहीं
3. मुकेश कुमार, ग्राम अतरौली जिला अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) से परिवार के 7 सदस्यों के साथ दर्शन के लिए दूसरी बार आए। इनकी बहन का स्वास्थ्य रात में खराब होने से उल्टी होने लगी। दवा की खोज करते रहे लेकिन दवा नहीं मिली जबकि जिला पंचायत द्वारा चिकित्सा सेवा उपलब्ध करायी गयी लेकिन वहाँ पर कोई भी उपस्थित नहीं था।

समस्या एवं सुधार

- निःशुल्क ठंडेपानी की व्यवस्था हो
 - चिकित्सा सेवा उपलब्ध हो
4. आकाश, जिला सम्भलपुर (ओड़ीशा) पूर्णागिरी मेले में चौथी बार अपने 55 मित्रों के साथ पूर्णागिरी दर्शन करने आये। एक रात टुन्यास धर्मशाला में रुके वहां की सफाई व्यवस्था अच्छी थी। उन्होंने ये निम्न जानकारी दी;
- चिकित्सा सेवा उपलब्ध नहीं
 - दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं की लाइन महिला/पुरुष की अलग-अलग लगाई जाये।
5. अशोक कुमार (पूर्णागिरी मेला सफाई कर्मचारियों के ठेकेदार) टुलीगाड़, टुन्यास से पूर्णागिरी मंदिर तक इनके 80 सफाई कर्मचारी सफाई व्यवस्था (रोड सफाई) में लगे हैं जिनको 7000-9000 रूपये प्रत्येक व्यक्ति मिलता है। उन्होंने बताया की मल-जल निस्तारण हेतु सैफ्टिक टैंक बनाये गए है लेकिन सीवर नहीं लगाया गया है।
6. यहाँ सफाई के दौरान जो भी कूड़ा निकलता है उसके निस्तारण के लिए कुछ नहीं है बल्कि समस्त कूड़ा नदी में फेक दिया जाता है और बरसात के पानी के साथ पूरा कूड़ा-कचरा बह जाता है। नदी का पानी मट-मैला हो जाता है जो पीने योग्य नहीं रहता है।
7. प्रबन्धन (सफाई-कर्मचारियों) द्वारा मेला आधिकारी को कई बार अवगत कराया गया लेकिन अभी विभाग द्वारा कोई कार्यवाही नहीं हुई है। टुलीगाड़ में नल जल योजना (बड़ी पानी की टंकी) के तहत बनवाया जाये ताकि पीने का पानी स्वच्छ मिल सके। अभी झरने का पानी मिल रहा है जो बरसात के समय खराब हो जाता है।

www.vironicsindia.in

www.indonepal.in

vironics@gmail.com

Indo Nepal Joint Action Forum is a working group for joint interventions in matters of trans-boundary issues concerning people and their environment, human rights, social justice and public affairs.

Uttaranchal Development Institute (UDI) is based in Banbasa, bordering Nepal, in what is generally known as Nainital tarai (foot hill plain), it had defined marginalized/excluded communities/groups, as its major concerns including the Tharu and Buxa tribes and has associated with different organisations on a variety of issues.

Environics Trust is a not for profit research and community development organisation and an enabling institution. Environics conducts participatory research on issues of environment and human behaviour and uses these outcomes for innovative community development programmes. Environics anchors several networks and partnerships. Environics is a co-founder and promoter of the [mines minerals and PEOPLE alliance \(mm&P\)](#) for which it also functions as the National Secretariat, the [Indian Network on Ethics and Climate Change \(INECC\)](#) and the [EIA Resource and Response Centre \(eRc\)](#).

The current process of strengthening information in the Mahakali Basin is being done with the assistance and common understanding of this forum which brings with it rich local experience of diverse community issues.